10

# प्राथमिक शिक्षा में विज्ञान और नैतिकता के समावेशन की आवश्यकता दर्शाती कलाम साहब की *तेजस्वी मन*

पूर्णिमा पाण्डेय*
दीपा मेहता**

वर्तमान समय में कोरोना महामारी ने जिस तरह से हमारे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक वातावरण को प्रभावित किया है, कहीं न कहीं यह महामारी मानव जीवन के लक्ष्य एवं आवश्यकताओं को पुनर्संरचित एवं पुनर्स्थापित करने की ओर इशारा करती है। इसके साथ ही, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, जनसंख्या वृद्धि, पर्यावरण प्रदूषण, मानवीय एवं नैतिक मूल्य में गिरावट, हमारे शैक्षिक उद्देश्यों, शैक्षिक पाठ्यक्रम एवं शिक्षा-प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन की नितांत आवश्यकता को दर्शाती है। मौजूदा समय में जिस तरह से शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी पाने एवं भौतिक संसाधनों की प्राप्ति का जरिया बन कर रह गया है, ऐसी परिस्थिति में शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास में सहायक न होकर अवरोधक ही बन रही है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों, गतिविधियों एवं अध्यापन शैलियों में परिवर्तन किया जाए। शिक्षा को विज्ञान और तकनीकी के साथ-साथ आध्यात्मिक और नैतिक विकास की प्रक्रिया में भी एक मजबूत सहायक प्रणाली के रूप में उभरकर सामने आना होगा; क्योंकि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य विज्ञान, तकनीकी, आर्थिक एवं प्रौद्योगिकी विकास के साथ-साथ मानवीय आचरण में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का समावेशन करना भी है। इसी क्रम में, भारत के पूर्व-राष्ट्रपति अब्दुल कलाम द्वारा लिखित पुस्तक 'तेजस्वी मन' हमारी वर्तमान शिक्षा-नीतियों, पाठ्यचर्या, विद्यालयी-पाठ्यक्रम के साथ-साथ प्रधानाध्यापकों, अध्यापकों, माता-पिता, अभिभावकों के लिए मार्ग-प्रशस्त करती है कि बालक-बालिकाओं में विज्ञान व तकनीकी ज्ञान के साथ ही चारित्रिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान का विकास किस प्रकार किया जाए? यह पुस्तक विद्यार्थियों में प्रारंभिक स्तर से ही देश-प्रेम, देश-रक्षा, भारतीय संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों, जैसे— सत्य, त्याग, समर्पण, कर्तव्यनिष्ठता, ईमानदारी, समानता, एकता को अपने व्यवहार में समावेशित करने पर बल देती है। अतः यह पुस्तक प्राथमिक शिक्षकों के साथ-साथ नीति निर्माताओं, विद्यालय प्रशासकों, एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों को प्राथमिक शिक्षा में विज्ञान और नैतिकता के समावेशन की परिपाटी बुनने के लिए प्रेरित एवं मार्गदर्शित करती है।

* *व्याख्याता*, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, रोहतास, सासाराम 821 115

** *असोसिएट प्रोफेसर*, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी 221 010

अबुल पकिर जैनुलआब्दीन अब्दुल कलाम भारत के पूर्व-राष्ट्रपति, प्रसिद्ध वैज्ञानिक, अभियंता तथा मिसाइल-मैन के रूप में विख्यात हैं। वे मुख्यतः एक वैज्ञानिक के रूप में चार दशकों तक रक्षा-अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी.आर.डी.ओ.) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (आई.एस.आर.ओ.) में कार्यरत थे। उन्होंने शिक्षा, विज्ञान, लेखन, सार्वजनिक-सेवा आदि में विशेष योगदान की वजह से 'भारत रत्न' सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किए। ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा लिखित पुस्तक *तेजस्वी मन* मुख्यतः भारत की कुछ गंभीर समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए विकसित भारत के स्वप्न को पूर्ण करने का एक प्रयास है। यह पुस्तक 12वीं कक्षा की छात्रा 'स्नेहल ठक्कर' को समर्पित है, जिससे कलाम जी एक विद्यालय में मिले थे। आनंदालय हाईस्कूल में बच्चों से बातचीत के दौरान एक प्रश्न उठा— "हमारा दुश्मन कौन है?"

कलाम जी को कई बच्चों ने जवाब दिया, परंतु उन सभी जवाबों में 'स्नेहल ठक्कर' द्वारा दिया गया जवाब सबसे उपयुक्त था, जो है "गरीबी ही हमारा सबसे बड़ा शत्रु है।"

*तेजस्वी मन* पुस्तक को नौ अध्यायों में आयोजित किया गया है, जो विभिन्न ज्वलंत विचारों, मूल्यों एवं समकालीन मुद्दों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हैं। नौ अध्याय निम्नवत हैं—

1. स्वप्न और संदेश
2. हमें हमारा आदर्श दो
3. समर्पित अध्यापक, साधक वैज्ञानिक
4. सत्संग की शक्ति
5. राजनीति तथा धर्म से परे देशभक्ति
6. ज्ञानवान समाज
7. ताकतों को एकजुट करना
8. नए राज्य का निर्माण
9. मेरे देशवासियों के नाम

उपर्युक्त नौ अध्यायों में कलाम जी द्वारा कई विषयों को शामिल किया गया है।

### प्रथम अध्याय 'स्वप्न और संदेश'

इस अध्याय में अहिंसा, शांति, प्रेम, प्रसन्नता, आनंद, मानवता, त्याग जैसे मूल्यों का मानव-जीवन में आवश्यकता एवं उपादेयता का उदाहरण सहित वर्णन किया गया है। उदाहरण के लिए, कलाम जी ने 'त्याग-मूल्य' को इन शब्दों में वर्णित किया है— "मैं हमेशा ही प्रकृति के नजदीक रहा हूँ और उसे हमेशा एक दोस्त की तरह पाया है, जो बगैर किसी संकोच के बस देना ही जानती है, आम के उस पेड़ की तरह जिस पर लोग पत्थर फेंकते हैं, उसकी शाखाओं को तोड़ डालते हैं, मगर इसके बावजूद वह थके-हारे मुसाफिरों को छांव और भूखों को फल देता है..." (पृ.सं. 20–21)। अतः प्रारंभिक स्तर पर बालक-बालिकाओं को शिक्षक द्वारा प्राकृतिक वातावरण में रहते हुए प्रकृति को ही माध्यम बना कर विभिन्न विषयों को पढ़ाया जाना चाहिए। प्रकृति की भाँति, अपने अंदर से अहंकार, लालच, ईर्ष्या, नफरत, क्रूरता, लोभ, भय, चिंता आदि को दूर करके स्व-व्यवहार में नैतिक एवं मानवीय-मूल्यों को आत्मसात करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

## द्वितीय अध्याय 'हमें हमारा आदर्श दो'

द्वितीय अध्याय में कलाम जी द्वारा देशभर के विद्यार्थियों से वार्तालाप पर आधारित है। इस अध्याय में पूर्व-राष्ट्रपति जी आध्यात्मिक एवं भौतिक संपदाओं के मध्य संतुलन की बात करते हुए बच्चों के लिए उनके आदर्श के बारे में अपनी स्पष्ट राय प्रकट करते हैं। उनके अनुसार, बच्चों के माता-पिता, अभिभावकों तथा अध्यापकों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है, क्योंकि बच्चों में सार्वभौमिक मूल्यों (सत्य, अहिंसा, प्रेम, सदाचरण, शांति) पर आधारित संपूर्ण-विकास की प्रक्रिया में अभिभावकों एवं अध्यापकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कलाम जी के शब्दों में, "मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि अगर अभिभावक और अध्यापक युवाओं का जीवन संवारने के लिए आवश्यक समर्पण की भावना रखें तो भारत को एक नया जीवन मिल सकता है। जैसा कि कहा भी गया है— अभिभावकों के पीछे स्कूल खड़ा होता है और अध्यापक के पीछे होता है घर" (पृ.सं. 31–32)। बालकों में मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों को कोई कानून या नियम नहीं विकसित कर सकता है। मूल्यों के समावेशन के लिए माता-पिता, परिवार, संबंधियों तथा अध्यापकगण को अपनी उचित भूमिका निभानी पड़ेगी।

## तीसरे अध्याय 'समर्पित अध्यापक, साधक वैज्ञानिक'

तीसरे अध्याय में भारत के प्रसिद्ध अध्यापकों, विचारकों, विद्वानों, गणितज्ञों, मनीषियों, भौतिक विज्ञानियों, समाज-सेवकों आदि के कार्यों के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया गया है। इनके संक्षिप्त परिचय द्वारा कलाम जी प्रत्येक देशवासियों को यह संकेत देना चाहते हैं कि वर्तमान में ऐसे ही महापुरुषों एवं विद्वानों की आवश्यकता है, तभी देश के अंदर मौजूद गरीबी, भ्रष्टाचार, असमानता, द्वेष, सांप्रदायिक, हिंसा को सदैव के लिए समाप्त करके भारत को एक विकसित तथा गुणवत्तापूर्ण राष्ट्र के रूप में स्थापित किया जा सकता है। अतः अभिभावकों, माता-पिता एवं शिक्षकों की यह जिम्मेदारी है कि वे बच्चों को शुरू से ही स्व-विकास के साथ-साथ अपने समाज, देश एवं पर्यावरण के प्रति भी संवेदनशील बनाएँ, ताकि उनमें निःस्वार्थता, त्याग और सेवा के गुण विकसित हो सकें।

## चतुर्थ अध्याय 'सत्संग की शक्ति'

चौथे अध्याय में कलाम जी ने विज्ञान तथा आध्यात्मिकता के मध्य संतुलन व समन्वयन की आवश्यकता पर भी वृहद एवं स्पष्ट रूप में अपने विचारों का सचित्र प्रस्तुतीकरण किया है। वर्तमान समय में, विश्व विज्ञान, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी-क्षेत्रों में निरंतर विकास तो कर रहा है, परंतु दूसरी तरफ नैतिक व मानवीय मूल्यों का अनवरत ह्रास हो रहा है। तकनीकी एवं भौतिक संसाधनों के विकास की अंधी दौड़ में मानव आध्यात्मिकता, मानवता एवं नैतिकता से मुख मोड़ चुका है। अतः कलाम जी ने सभी का ध्यान इस ओर आकर्षित करने के लिए इस अध्याय में कई संतों से अपने वार्तालाप के अनुभवों को साझा किया है, जिसमें प्रमुख रूप से स्वामीनारायण संस्था के प्रमुख स्वामी महाराज से हुई वार्ता बहुत ही प्रभावशाली एवं प्रेरक है, जो मानव-जीवन में

आध्यात्मिक ज्ञान की महत्ता पर प्रकाश डालता है। आध्यात्मिक ज्ञान होने पर स्वतः ही व्यक्ति में अपने देश, समाज और धर्म के प्रति प्रेम एवं जिम्मेदारी का भाव विकसित हो जाता है। अतः यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम भारतीय शिक्षा प्रणाली में पुनः प्राचीन भारतीय आध्यात्मिक ज्ञान को आत्मसात किया जाए, तथा प्राथमिक शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों एवं विद्यालय प्रशासकों को प्रशिक्षित किया जाए। इस परिप्रेक्ष्य में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 भी भारतीय स्वदेशी पारंपरिक ज्ञान प्रणाली (Indigenous Traditional Knowledge System) को विद्यालयी पाठ्यक्रम में संरक्षित और अंगीकृत करने पर बल देती है। कलाम जी के अनुसार शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, सूचना-संचार, ढाँचागत प्रौद्योगिकी विकास के लिए ईमानदार, नैतिक व मानवीय मूल्यों से प्रेरित लोगों की आवश्यकता होगी। ऐसे मूल्यवान एवं नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण नागरिकों का निर्माण आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा द्वारा ही हो सकता है। अतः एक उन्नत व समृद्धशाली राष्ट्र के निर्माण के लिए आध्यात्मिक ज्ञान के धरातल पर ही विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का विकास होना चाहिए, क्योंकि तभी वास्तव में विज्ञान संपूर्ण प्राणी-जगत के लिए वरदान साबित होगा।

### पाँचवाँ अध्याय 'राजनीति तथा धर्म से परे देशभक्ति'

पाँचवे अध्याय में कलाम जी ने भारत की विविधता तथा विभिन्नता की व्याख्या करते हुए, देशवासियों की आत्मा में देश के प्रति प्रेम, बलिदान, धार्मिक-सहिष्णुता की भावना एवं एकता जैसे मूल्यों को आवश्यक बताया है। कलाम जी के अनुसार, भारत देश को सबसे ज्यादा खतरा उन विचारकों से है, जो जनता को धार्मिक दंगे, सांप्रदायिक हिंसा, जातिगत समीकरण, लैंगिक भेदभाव, क्षेत्रवाद आदि के आधार पर विभाजित करना चाहते हैं। अतः हमारे देश के विकास के लिए बालकों में ऐसी व्यापक दृष्टि की आवश्यकता है, जिससे सभी के अंदर अपने देश के प्रति त्याग एवं प्रेम के साथ-साथ एकता एवं भाईचारे को पुष्पित एवं पल्लवित किया जा सके।

### छठा अध्याय 'ज्ञानवान समाज'

छठे अध्याय में कलाम जी ने ज्ञान के रूपों पर चर्चा करते हुए ज्ञान को "हमेशा से समृद्धि व ताकत का स्त्रोत" बताया। ज्ञानवान समाज के निर्माण के लिए विविध प्रौद्योगिकी, समुचित प्रबंधन-प्रणाली, न्यायप्रिय प्रशासनिक प्रणाली, सुचारु दूरसंचार संपर्क व्यवस्था, संसाधनों से परिपूर्ण कृषि-व्यवस्था, रोजग़ारपरक व मूल्यपरक शैक्षिक-व्यवस्था आदि का होना बेहद जरूरी है, क्योंकि यही विशेषताएँ देश के नागरिकों को ज्ञानवान बनाती हैं तथा देश के ज्ञानवान नागरिक अपनी योग्यता और सेवा-भाव से अपने राष्ट्र एवं समाज को ज्ञानवान बनाते हैं।

### सातवाँ अध्याय 'ताकतों को एकजुट करना'

सातवें अध्याय में कलाम जी ने पाँच क्षेत्रों के एकीकरण एवं समन्वयन को देश की सफलता की कुंजी बताया है। यह पाँच क्षेत्र हैं—

(1) कृषि तथा खाद्य प्रसंस्करण; (2) बिजली; (3) शिक्षा और स्वास्थ्य रक्षा; (4) सूचना प्रौद्योगिकी; (5) परमाणु अंतरिक्ष तथा रक्षा प्रौद्योगिकी।

विकसित भारत के सपने को साकार करने के लिए उपरोक्त पाँचो क्षेत्रों में संवृद्ध विकास कार्यक्रमों, जागरूकता अभियान तथा एकीकृत कार्य प्रणाली के आधार पर खाद्यान्न, आर्थिक, सामाजिक और राष्ट्रीय सुरक्षा को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। देश के विकास एवं प्रगति के लिए इन सभी क्षेत्रों में मिशन-भाव से प्रत्येक नागरिक को क्षमतानुसार अपनी सहभागिता देनी होगी। अतः प्रारंभिक स्तर से ही विद्यार्थियों को अपने स्थानीय क्षेत्रों से संबंधित कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, बिजली-उत्पादन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा, सूचना प्रौद्योगिकी आदि की मूलभूत जानकारी दी जानी चाहिए, जिससे उनमें शुरू से ही इन क्षेत्रों के प्रति रुचि, समझ और जागरूकता विकसित हो सके। तब जाकर ऐसे विद्यार्थी भविष्य में एक अच्छे कृषक, शिक्षक, व्यवसायी, वैज्ञानिक एवं अंतरिक्षयात्री बन सकेंगे।

### आठवाँ अध्याय 'नए राज्य का निर्माण'

आठवें अध्याय में कलाम जी ने भारत की एक प्रमुख समस्या की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। प्राकृतिक संपदा, संसाधनों, शक्ति एवं सौंदर्य से परिपूर्ण होने के बावजूद, भारत एक गरीब देश है; क्योंकि हमारे देश में मूल्यवर्धन पर ध्यान नहीं दिया जाता है। हम खनिज पदार्थों एवं अयस्कों को आवश्यक-उत्पाद में बदलने की जगह कच्चे माल के रूप में विदेशों को निर्यात कर देते हैं। अतः विकास की रफ्तार को बढ़ाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति की मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता है। सफलता-असफलता की सोच से ऊपर उठकर हमें कार्य करने के लिए जोखिम लेने की आवश्यकता है, तभी सफलता हमारे कदम चूमेगी। यह तभी संभव होगा, जब हम अपने विद्यालयों में विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ स्थानीय व्यावसायिक-कौशलों में भी प्रशिक्षित करेंगें।

### नौवाँ अध्याय 'मेरे देशवासियों के नाम'

नौवें अध्याय में कलाम जी ने भावी-भारत की कल्पना की है। ऐसा भारत, जो गरीबी, असमानता, निरक्षरता, भ्रष्टाचार आदि बुराइयों से मुक्त हो, स्वतंत्र हो। विद्यार्थियों को प्रारंभ से ही भेदभाव एवं असमानता से रहित ऐसा स्वस्थ वातावरण दिया जाना चाहिए, जिससे वे एकता एवं सौहार्द्र को अपना सकें। ऐसा भारत, जहाँ श्रेष्ठ नेता शासन-तंत्र पर आसीन हो। ऐसा भारत, जहाँ शांति एवं समृद्धि विद्यमान हो। ऐसा भारत, जहाँ सभी देशवासी मिलजुल कर रहें एवं देश की प्रगति एवं देश-हित में निरंतर प्रयासरत रहें। ऐसे भारत का आगाज हमारे विद्यालयों, बालक-बालिकाओं, शिक्षकों, अभिभावकों एवं माता-पिता के सहयोग से ही संभव हो पाएगा। अतः कलाम साहब की '*तेजस्वी मन*' पुस्तक की शुरुआत ही एक विद्यालय में बच्चों से बातचीत से होती है।

*तेजस्वी मन* पुस्तक के माध्यम से ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने वास्तविक रूप में भारत के प्रत्येक शिक्षक तथा प्रत्येक विद्यार्थी के मन एवं हृदय को तेजवान, ऊर्जावान एवं ओजवान बनाने का अथक प्रयास किया है। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को देश से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों एवं क्षेत्रों के बारें में व्यवस्थित तरीके से परिचित कराया है। इस पुस्तक

के माध्यम से, कलाम जी ने भारत के लोगों के समक्ष 'जय जवान-जय किसान-जय विज्ञान-जय अध्यात्म' के घोष को मूर्त रूप में प्रस्तुत किया है। साथ ही, यह भी मार्ग प्रशस्त किया है कि जीवन में किसी मंजिल पर पहुँचने के लिए सादगी, साधुतत्व एवं तप-भाव से ही लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। यदि भारत को एक समृद्ध और विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित होना है, तो प्रत्येक नागरिक को पूर्ण सुसज्जित तरीके से निष्ठावान होकर सतत एवं निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता है, क्योंकि संक्षिप्त-मार्ग से देश की प्रगति और सफलता सुनिश्चित नहीं की जा सकती। कलाम जी ने अपनी पुस्तक के माध्यम से विज्ञान तथा नैतिकता के मध्य संतुलन व समन्वयन के संदर्भ में स्पष्टतः यह बताया है कि एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, विज्ञान, तकनीकी के पंखों से तो हो सकता है, परंतु उस पंछी का मन, हृदय एवं चरित्र मूल्यवान एवं नीतिवान होना चाहिए।

## निष्कर्ष

अंततः हम यह कह सकते हैं कि पेड़ की शाखाएं चाहे जितनी भी प्रौद्योगिकी, विज्ञान, तकनीकी की पत्तियों से हरी-भरी हों, परंतु उसकी जड़ें सदा ही मूल्यों एवं नीतिवान आदर्शों से ही सिंचित एवं सृजित होनी चाहिए, तभी वह संपूर्ण देश एवं विश्व के लिए कल्याणकारी एवं शुभकारी होगा। अतः हमें अपने विद्यार्थियों में विज्ञान व तकनीकी ज्ञान के साथ ही चारित्रिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान को सिंचित और विकसित करना होगा।

## संदर्भ


कलाम, ए.पी.जे.ए. 2016. *इग्नायटेड माइंड्स : अनलिशिंग द पावर विदिन इंडिया*. पेंग्विन बुक्स, भारत.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय. भारत सरकार, नई दिल्ली.